E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.711

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2025 Special Issue 15 Volume VI (B)

हिंदी नाट्य साहित्य : विविध परिदृश्य

अतिथि संपादक
प्रो.डॉ.एस.ए.ठाकूर
प्राचार्य
स. का. पाटील सिंधुदुर्ग महाविद्यालय, मालवण

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो. डॉ. जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

डॉ.हंबीरराव चौगुले
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
स. का. पाटील सिंधुदुर्ग महाविद्यालय, मालवण

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli
Akshara Publication

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

E- ISSN 2582-5429/SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 15/ Vol.VI(B)

अनुक्रम

अ. क्र.	आलेख शीर्षक	अध्यापक का नाम	पृ.क्र.
1	21 वीं सदी का हिंदी नाट्य साहित्य : राजनीतिक परिदृश्य	प्रो.अपर्णा पाटील	05
2	राजनीतिक षड्यंत्र का कच्चा-चिट्ठा खोलता 'महाभोज'	डॉ. भाऊसाहेब एन. नवले	07
3	धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' नाटक का सांस्कृतिक मूल्यांकन	प्रा. डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार	11
4	मोहन राकेश के नाटकों में नारी	डॉ.हंबीरराव मारुती चौगले	15
5	इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में प्रसाद के नाटकों में आदर्श नारी पात्र प्रसाद	प्रा.डॉ. शाहू दशरथ मधाळे	17
6	21 वीं सदी के हिंदी दलित नाटकों का राजनीतिक परिदृष्य	प्रा.डॉ. साताप्पा शामराव सावंत	20
7	डॉ.आंबेडकर की विचारधारा से प्रभावित दलित हिंदी नाटक	प्रो.डॉ.एम.ए.येल्लुरे	24
8	असगर वजाहत के नाटकों में सांप्रदायिकता और धार्मिक उन्मादविरोधी स्वर	डॉ. अशोक मोहन मरळे	27
9	डॉ. सुशीला टाकभौरे के 'नंगा सत्य' नाटक में दलित जीवन की वेदना	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर डॉ. रगडे परसराम रामजी	31
10	भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था का दृश्यांकन 'बकरी' नाटक	डॉ. मधुकर लक्ष्मण डोंगरे	35
11	इक्कीसवीं सदी के 'नंगा सत्य' नाटक में दलित विमर्श	प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	37
12	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में राजनीतिक परिदृश्य	प्रा.डॉ.संग्राम यशवंत शिंदे	39
13	'हैलो कामरेड' नाटक में राजनीतिक परिदृश्य	डॉ.विक्रम बालकृष्ण वारंग	42
14	दूर देश की गंध' नाटक संग्रह में चित्रित विविध परिदृश्य	डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने	45
15	समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक मूल्य	प्रा. डॉ. सौ. ऐनूर एस. शेख	50
16	21 वीं सदी के हिंदी नाटकों में चित्रित राजनीतिक परिदृश्य	डॉ. संदीप पांडुरंग शिंदे	53
17	हिंदी नाटक साहित्य में युवा मानसिकता का चित्रण	डॉ. वाघमारे खंडूजी हानवतराव	56
18	'वह एक दिन ' नाटक में इक्कीसवीं सदी का सामाजिक परिदृश्य	प्रो.डॉ.सुपर्णा गंगाधर संसुध्दी	60
19	मानव की अगाध जिजीविषा को व्यक्त करता नाटक : 'पगला घोड़ा'	डॉ. अश्फ़ाक़ इब्राहीम सिकलगर	63
20	'काला पत्थर' नाटक में नारी-संवेदना	डॉ.अशोक आनंदराव साळुंखे	66
21	हिंदी नाटक साहित्य : नारी विषयक परिदृश्य	डॉ.संजय नारायण पाटिल	68
22	पितृसत्ताक समाज में स्त्री विडंबना की अभिव्यक्ती मीरा कांत द्वारा रचित "नेपथ्य राग" नाटक के संदर्भ में।	प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	73
23	21 वीं सदी का हिंदी नाट्य साहित्य: दलित विषयक परिदृश्य	श्रीमती प्राजक्ता नानासाहेब देशमुख प्रो.डॉ. ललिता एन. राठोड	76
24	'आधे-अधूरे' नाटक में सामाजिक परिदृश्य	डॉ .संगिता दिपक माली	79
25	हिन्दी नाट्य साहित्य: नारी विषयक परिदृश्य	प्रा. डॉ. सुशांत एस. ठोके	82
26	21 वीं सदी के नाटकों मे राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव (जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' नाटक के विशेष संदर्भ में)	डॉ. चौधरी निलोफर महेबुब	84
27	"डॉ. मीरा कांत के नेपथ्य राग नाटक में चित्रित नारी संवेदना"	डॉ. संजय बजरंग देसाई	86
28	सत्य के मार्ग का महिमामंडित करती प्रासंगिक रचना अभंग गाथा	डॉ आरिफ शौकत महात	89
29	हिंदी नाट्य साहित्य : नारी विषयक परिदृष्य	श्रीमती. रेखा अशोक पाटील	92
30	हिंदी नाट्य साहित्य में चित्रित स्त्री - विमर्श	डॉ. संगीता राहुल यादव	94
31	21 वीं सदी का हिंदी नाटक साहित्य दलित विषयक परिदृश्य	डॉ. संघप्रकाश दुड्डे	96
32	मरुभूमि में ज्ञान के प्रसार और नारी शिक्षा में स्वामी केशवानंद जी की उपलब्धियां: एक विस्तृत अध्ययन	लक्ष्मी	102

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429/SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 15/ Vol.VI(B)

28

सत्य के मार्ग का महिमामंडित करती प्रासंगिक रचना अभंग गाथा

डॉ आरिफ शौकत महात
हिंदी विभाग प्रमुख
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

इतिहास में ऐसे कम ही व्यक्ति हुए हैं जो हमेशा प्रासंगिक बने रहे हैं। जो कब के दुनिया से शरीर को त्याग चुके हैं लेकिन उनके विचार एवं जीवन पद्धति लगातार हरदौर के लोगों के लिए प्रासंगिक बनी रही है और यकिनन दुनिया के कायम रहने तक प्रासंगिक बनी रहेगी। इन व्यक्तियों के चरित्र के अध्ययन करने के उपरांत प्रमुख तत्व के रूप में जो सामने बात आती है, वह है- 'उनकी कथनी और करनी में समानता।' यह लोग व्यक्तिगत होते हुए भी अपने आप में सामाजिक स्वरूप को लिए हुए थे।

हिंदी साहित्य के संत कबीर और मराठी साहित्य के संत तुकाराम इसी श्रेणी में आते हैं। इनका साहित्य अपने समय के साथ आज भी प्रासंगिक बना हुआ है। उनके साहित्य की महत्व तब और बेहतर तरीके से समझ में आता है, जब हम उनके जीवन को समझने का प्रयास करते हैं। नरेंद्र मोहन वह नाटककार हैं जिन्होंने इन दोनों की जीवन को नाटक के माध्यम से समझने का हमें मौका दिया।

डॉ. नरेंद्र मोहन हमेशा अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य कसते रहे हैं। इनके अब तक छः नाटक प्रकाशित हुए हैं। 1. 'कहें कबीर सुन भई साधो' नाटक सन 1987 में प्रकाशित हुआ, जिसमें कबीर का सामाजिक बुराइयों से संघर्ष दिखाया गया है। 2. 'सींगधारी' नाटक सन 1998 में प्रकाशित हुआ जिसकी मूल समस्या आतंकवाद है। 3. 'कलन्दर' नाटक सन 1991 में प्रकाशित हुआ। इसमें 14वीं शताब्दी की अंतिम दशक के दौर के भारतीय धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश को कलंदर मस्त मौला फकीर के माध्यम से रखा गया है। 4. 'नोमैंस लैण्ड' नाटक सन 1994 में प्रकाशित हुआ। इसमें भारत और पाकिस्तान के पागलों के अदला-बदली की कहानी है। इस नाटक पर मंटो की कहानी टोबाटेक सिंह का प्रभाव नजर आता है। साथ ही इसमें देश के बंटवारे को लेकर भाष्य किया गया। 5. 'अभंग-गाथा' नाटक सन 2014 में प्रकाशित हुआ है। इस नाटक मे संत तुकाराम जी के जीवन को दर्शाया गया है। साथ ही तत्काली सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश पर व्यंग्य कस गया है। 6. 'मि. जिन्ना' नाटक सन 2015 में प्रकाशित हुआ है। इसमें जिन्ना के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक परिवेश पर प्रकाश डाला गया है। कुल मिलाकर नरेंद्र मोहन के पूरे नाटक मध्यकाल से आधुनिक काल के समय के सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश को उजागर करने का काम बखूबी करते हैं।

अभंग-गाथा महाराष्ट्र के संत तुकाराम जी के जीवन पर आधारित नाट्य रचना है। कबीर की तरह मस्तमौला के रूप में धार्मिक आडंबर,सामाजिक, राजनीतिक व्यंग्य की धुरी के वाहक के रूप में तुकाराम जी को एवं उनके साहित्य को देखा जाता है। नरेंद्र मोहन पंजाबी हैं। हिंदी में लिखते हैं। लेकिन मराठी भाषी संत तुकाराम के जीवन को नाट्य रूप में लेखन करने की प्रेरणा के संदर्भ में वह कहते हैं- "मुझे याद है उनके अभंग पढ़ते हुए मुझे कबीर की साखियाँ बेसाख्ता याद आ जाती थीं। सोचता हूँ क्या कबीर मुझे तुकाराम तक ले आए ? ठीक-ठीक कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि मैं इस नाटक को लिखने में क्यों प्रवृत्त हुआ ? हाँ, यह ठीक है कि तुकाराम के संतापों और संघर्षों, उनकी सृजनात्मक अकुलाहट और छटपटाहट के धरातलों से मैं बार-बार मथा जाता रहा।" [1] जीवन एवं साहित्य से अवगत होने पर नरेंद्र मोहन कहते हैं की तुकाराम के जीवन के सैकड़ो पक्ष है लेकिन मुझे दो बातों ने नाटक लिखने के लिए मजबूर किया। पहला पक्ष है उनकी सच की प्रति निष्ठा और उसे अमल में लाने का साहस। दूसरा पक्ष है उनकी सृजनात्मकता। शब्द शक्ति में तुकाराम जी की असीम आस्था थी। उनका प्रसिद्ध अभंग है-

आम्हा घरी, धन शब्दाचीच रत्ने । शब्दाचीच शस्त्रे यत्न करूँ ॥ 1 ॥
शब्दचि आमुच्चा, जीवाचे जीवन ! शब्दें वाटे धन, जन लोकाँ ॥ 2 ॥
तुकाम्हणे पाहा, शब्दचि हा देव । शब्देंचि गौरव, पूजा करूँ ॥ 3 ॥
(घर में हमारे शब्दों के ही रत्न/शब्दों के शस्त्र युद्ध हेतु ॥ शब्द से ही हमारे प्राणों का जीवन/बाँटे शब्द-धन जन लोक में ॥ कहे तुका देखो शब्दार्थ ही देव । शब्द ही गौरव पूजा करे ॥) [2]

इसी अभंग के इर्द-गिर्द पूरा नाटक आकार लेता है। मध्यकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश को इस तरह नाट्य में ढाला गया है कि इसमें तुकाराम की जगह वर्तमान सत्य का हिमायती किसी भी व्यक्ति को रखा जाए तो उसकी यही कहानी रहेगी। जो इस नाट्य कृति की प्रासंगिकता को अधोरेखित करती है।

सत्य के वाहक को हर दौर में सामाजिक एवं राजनीतिक समूह की ओर से प्रताड़ना सहनी पड़ती है। तुकाराम को भी सत्य की कीमत चुकानी पड़ी है। उनके अभंग एवं शब्द सामाजिक असमानता पर प्रहार करते हैं। आम जन में चेतना का संचार करते हैं। जिससे प्रस्तावित उच्च वर्गीय समाज उनके वाणी से आहत होते हैं। जो नाटक में मंबाजी, पाटिल एवं रामेश्वर भट्ट के माध्यम से प्रस्तुत

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429/SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 15/ Vol.VI(B)

किया गया है। समाज में फैली उच्च नीचता की यह दीवार आज भी बरकरार है और इसके बनाए रखने का हर दौर में प्रयास किया जाता रहा है। जिसके चलये सामाजिक शोषण किया जा सके और अपनी सत्ता को अबाधित रखा जा सके। सत्ता एवं शोषण के खेल को धार्मिक एवं सामाजिक नीति के माध्यम से खेलने वाले के प्रति तुकाराम के शब्द शस्त्र बनकर खड़े होते हैं। उनके शब्द सत्ता एवं शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

इसी के कारण सामाजिक सत्ताधिकारियों के समूह द्वारा उन्हें कटघरे में खड़ा कर दिया गया। उनके शब्दों को दबाने के लिए उन पर आरोप लगाते रहे। उनकी वाणी को आतंक फैलाने वाला एवं राष्ट्र विरोधी साबित करने का भरकस प्रयास किया गया। सत्ता के और धार्मिक समुदाय के ठेकेदार अक्सर आम जनता के जागृत होने के सारे रास्तों पर पहरेदारी लगाते रहे हैं। जो इन्हें सचेत करने का प्रयास करता है। जो इनमें आशावाद लाने की कोशिश करते है, उसे इन तत्वों के द्वारा डराने का भरकश प्रयास किया जाता है। तुकाराम को भी इसी तरह डराया धमकाया गया। इसे अभंगगाथा के इस प्रसंग के माध्यम से बखूबी समझा जा सकता है।

"मंबाजी : ऊँचा मत बोल, तूने अपने अभंगों से सामाजिक शांति भंग की है।
तुकाराम : कैसे ?
मंबाजी : तूने छोटी जात वालों को ऊँची जात वालों के विरुद्ध भड़काया है।
पाटिल : तू शूद्र को ब्राह्मण का दर्जा देगा ? उसे ब्राह्मण के खिलाफ खड़ा करेगा?
तुकाराम : मेरे लिए ब्राह्मण-चमार में कोई भेद नहीं है।
पाटिल : तुम जमींदारों के खिलाफ किसान-विद्रोह खड़ा कर रहे हो ?
तुकाराम : तुम सरेआम उनकी हत्याएँ करो और वे चुप रहें ?
पाटिल : तुम लोगों को बगावत के लिए उकसा रहे हो। यह घोर अराजकता है।
तुकाराम : तुम समझते क्यों नहीं, पाटिल कि स्वाधीन ढंग से जीना और जीने के लिए प्रेरित करना अराजकता नहीं, सच के लिए जीना है।
पाटिल: अरे जा, जा, बड़ा आया सच का पैरोकार ! जो प्रमाणित न हो वह कैसा सच ? जाँच ही सच है, बाकी सब झूठ। तुम्हारी गाय की हत्या, हाँ, मैंने जाँच पूरी कर ली है।" [3]

और जब तर्कों के सहारे जनता को जागृत करने वालों को रोका जाना मुश्किल बन जाता है तो उनके खिलाफ झूठा प्रपोगोंडा तैयार किया जाता है। यह हर दौर की सियासती, धार्मिक एवं सामाजिक ठेकेदार अक्सर करते नजर आते हैं।

पाटिल : तमाम सबूतों से साबित है कि तूने खुद गाय की हत्या की है।
तुकाराम : वाह, पाटिल, क्या जाँच की है। मेरी गाय और मैं ही हत्यारा।
पाटिल : बड़े-बड़े ज्ञानी, पंडितों ने तेरे खिलाफ गवाहियों दी हैं।
तुकाराम : तेरे जैसा हत्यारा हाकिम जब मंबाजी जैसे ब्राह्मण और रामेश्वर भट्ट जैसे विद्वान् से मिल जाए तो कैसी जाँच और गवाही, कैसा न्याय ?
रामेश्वर भट्ट : मुझे अपने व्यक्तिगत मामले में क्यों घसीट रहा है ?
तुकाराम : न्याय-अन्याय व्यक्तिगत मामला नहीं है ?
रामेश्वर भट्ट : फतेह खाँ जैसे कातिल को घर में छिपाए हो और न्याय-अन्याय की हाँकते हो !
तुकाराम : वह मानवीय संबंध का प्रश्न है। घायल और रोगी की सेवा करना धर्म है।
रामेश्वर भट्ट : भई वाह, कितना लंबा-चौड़ा है तुम्हारा धर्म का घेरा। इसमें फतेह खाँ भी समा गया और देववाणी भी। (कड़ककर) देववाणी देव भाषा में उतरी है। उसे भाषा में लाकर तुम वेदवाणी और देव भाषा दोनों का अपमान कर रहे हो। [4]

सत्ता के विरुद्ध उठने वाली सत्य की आवाज को दबाने के लिए सत्ता के पक्ष में सत्ता द्वारा पुरस्कृत ज्ञानी पंडित एक रणनीति की तरह इकट्ठा होते हैं। और यह इकट्ठा होकर सत्य को ही कटघरे में खड़ा कर देते हैं। फिर न्याय-अन्याय की नुमाइश लगाकर सच को ही कसूरवार ठहराकर उसे सजा दी जाती है ताकि वह फिर से तथाकथित सत्ता के खिलाफ खड़ा ना हो सके।

इसीतरह तुकाराम की आवाज को दबाने के लिए उनके शब्दों पर पाबंदी लगा दी जाती है। तुकाराम के लिए जो शब्द रत्न थे। प्राण थे। वक्त पड़ने पर शस्त्र थे। जीने का आधार थे। जिसे शब्दों में ही ईश्वर के प्राप्ति का अनुभव मिलता था। उसे ही उसके लिए वर्ज किया जाता है। तुकाराम को ऐसा ही दंड रामेश्वर भट्ट द्वारा सुनाया जाता है। "मेरा आदेश है कि तुकाराम के अभंगों की पांडुलिपियों के साथ पत्थर बाँधकर उन्हें इंद्रायणी नदी में डुबो दिया जाए। भविष्य में उसके लिए अभंग-रचना निषिद्ध कर दी जाए और उसे धर्मविरोधी, अराजक आचरण के कारण गाँव से निष्कासित कर दिया जाए।" [5]

सत्य का गला घोटना किसी भी सत्ता के लिए फिर चाहे वह राजनीतिक हो या धार्मिक आसान नहीं रहता। उसे सत्य को दबाने हेतु औजार के रूप में तथाकथित विद्वान एवं धनिक काम करते हैं। तो कभी विद्वान एवं धनिक अपने को बनाए रखने के लिए धर्म एवं

राजनीति का हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। इन दोनों ही सूरत में लक्ष्य एक ही रहता है की वास्तविकता को आम जनता के सामने न आने देना, आम जनता को जागृत होने का मौका न देना। उन्हें भ्रम में डाले रखना। क्योंकि आम जनता जब पूरी तरह से जागती है तब किसी भी प्रकार की सत्ता के लिए वह मुश्किल पैदा कर सकती है। इसी ओर नरेंद्र मोहन प्रस्तुत नाटक में तुकाराम जी के माध्यम तथाकथित स्वार्थ लोलुप विद्वानों की भूमिका को स्पष्ट करते हैं। "जानता हूँ, एक तरफ सुलतानों, अमीर-उमरा तक तुम्हारी पहुँच है, दूसरी तरफ धनिक वर्ग तक। उनका गुणगान करके तुम उनसे लाभ और प्रतिष्ठा पाते हो, बदले में अपनी विद्या और बुद्धि को उनके चरणों में चढ़ा देते हो। यह विद्या और बुद्धि का व्यापार है। ऐसे विद्वान् और वेश्या में क्या अंतर है ? आज एक भी ऐसा विद्वान्, पंडित और बुद्धिजीवी नहीं दिखता जो निधड़क होकर सच की भाषा बोल सके।" [6]

सत्य के मार्ग पर चलना बड़ा कठिन कार्य है। इस मार्ग पर चलने वाले को घृणा, अपमान, लांछन एवं प्रताड़ना सहनी पड़ती है। यह उनके मार्ग की स्वाभाविक कठिनियां है जिसे हर सत्यान्वेषी को गुजरना पड़ता है। तुकाराम जी को भी इस मार्ग से गुजरना पड़ा। उन्हें अपनी ही जमीन से निर्वासित किया गया। तुकाराम के अभंग जिस इंद्रायणी नदी में डुबो दिए गए, क्या सचमुच वह डूब गए? बिल्कुल नहीं। बल्कि नदी की धारा की तरह समस्त संसार में फैल गए। तुकाराम के शब्द खामोशी से हर जगह फैल जाते हैं। जिसको नाटककार तुकाराम के माध्यम से व्यक्त करते है, "ये कैसी ध्वनियाँ हैं ? कहाँ से आ रही हैं ? भीतर एक खलबली है तो भी चुप हूँ। चुप्पी में से शब्द फूट रहे हैं, निष्पंद में से स्पंदन। कल, आज और कल काल के अखंड प्रवाह की भाँति मेरी चुप्पी में समाते जा रहे हैं। अतीत मेरा पीछा करता है वर्तमान में और भविष्य का पीछा करता हुआ मैं वहाँ आ गया हूँ जहाँ काल ठिठका हुआ है। एक बीज-अणु रेणु-सा छोटा, आकाश-सा बड़ा। ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय का भेद समाप्त हो गया है- 'मिट गई त्रिपुटी। दीप जगमगा घटी।' निश्चित हो मैंने मुकाम पाया है! एक विराट मौन में कुछ सुलग रहा है-स्वर, लय, ताल में।" 7 इस संदर्भ के आधार पर कह सकते हैं कि सत्य को परेशान किया जा सकता है लेकिन पराजित नहीं।

जो मंबाजी तुकाराम को जिंदगी भर शुद्र कहकर लांछित करता है। पागल ठहरता है। उसके चरित्र का हनन करता है। उसकी हत्या करने से भी आगे पीछे नहीं हटता। वह भी उसकी ही रंग में रंगता नजर आता है। तुकाराम के अभंगों की ध्वनियाँ उसे हर वक्त घेरे रहती है जिसकी आवाज कुएं में आवाज सी उसके अंदर घूमड़ती रहती है। तुकाराम के आसपास ना होने पर भी मंबाजी को तुकाराम का एहसास घेरे रहता है जो उसे पागल बनाने की कगार पर ला खड़ा करता है। इसी पागलपन में वह बड़बड़ाता भी रहता है, "कौन है जिसने मेरा नाम पुकारा है ? कितनी भी अबूझ हो, मैं हर लिपि पढ़ सकता हूँ। (पढ़ने का अभिनय करता है और थर-थर काँपने लगता है) यह तो तुका के अक्षर हैं-वही शब्द- वही संदेश प्रेम का ढाई आखर मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा। मेरी मर्जी के खिलाफ मेरे हृदय में दाखिल होता जा रहा है। मेरे भीतर मेरे ही खिलाफ कौन है मुझे झकझोरता, धिक्कारता?" [8]

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि सत्य भी तुकाराम की अभंगों की तरह हर दौर में कायम रहता है। उसे मिटाने का प्रयास फिर कोई चाहे क्यों न करता रहे। जैसे की नाटक के अंत में एक वारकरी गाते हुए कहता है- "वह मिला हुआ है -तुममें-मुझमें / इसमें उसमें / लब सा/ सुर- सा/ धड़क रहा / दृश्यों-गतियों में / सुलग रहा है वही / अभंग में शब्द-शब्द में / कण-कण में है वही प्रकंपित स्पंदित-सा खाली जगहों में।" [9] अतः इस सत्य के घेरे में वह भी आते हैं जो उसे अपमानित प्रताड़ित करते रहे हैं। तुकाराम के अस्तित्व को (याने सत्यान्वेषी) को मंबाजी भी अपने आसपास जीवित सा महसूस करता है। "देखो वह वही जिंदा है" दिख रहा मुझे छोड़कर नहीं जा सकता। तू अभंग, मैं तेरा अंग। तू है" है। कहाँ है? अंधड़ से दौड़ते दृश्य, गतियाँ-गति में दृश्य, दृश्य में अदृश्य सभी में वही एक शब्द-अखंड न खंडे, अभंग न भंगे वही ठौर वही ठिकाना..." [10] यही बातें इस नाटक की प्रासंगिकता को बनाए रखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ. मोहन नरेंद्र, अभंग-गाथा, जगतराम एण्ड संस दिल्ली, पृ. क्र. 9
2. वही पृ. क्र. 10
3. वही पृ. क्र. 70-71
4. वही पृ. क्र. 71
5. वही पृ. क्र. 73
6. वही पृ. क्र. 72
7. वही पृ. क्र.83
8. वही पृ. क्र. 87
9. वही पृ. क्र. 91
10. वही पृ. क्र. 91